समाज में अपराध के कारण का दार्षनिक अध्ययन

चंदन कुमार 'चंचल'
षोध छात्र, स्नातकोत्तर दर्षन षास्त्र विभाग
तिलकामॉझी भागलपुर वि0वि0,भागलपुर।
जे0आर0एफ0
एवार्डेडः—आई सी पी आर,नई दिल्ली

अपराध एक सार्वभौमिक समस्या है जो प्रत्येक समाज में किसी—न—किसी रूप एवं मात्रा में विद्यमान है। साथ ही, यह कोई नवीन परिघटना नहीं है, यद्यपि अपराध—दर में पिछले कुछ दषकों में काफी वृद्धि हुई है। दूसरे षब्दों में, यह कहा जा सकता है कि कानून का उल्लंघन ही अपराध कहलाता है।

इलियट एवं मैरिल के अनुसार, ''अपराध कानून द्वारा निशिद्ध (वर्जित) वह कार्य है, जिसके बदले में कर्त्ता को मृत्यु, कैद, काम—घर, सुधार—गृह या जेल के द्वारा दण्डित किया जा सकता है।''[1]

उदाहरणार्थ सेथना के अनुसार, ''अपराध की परिभाशा का कार्य अथवा गलती (भूल), पापमय या गैर—पापमय के रूप में दी जा सकती है जो सम्बन्धित देष के विषिश्ट समय पर लागू कानून के अन्तर्गत दण्ड योग्य है।''[2]

आखिर व्यक्ति समाज द्वारा स्वीकृत या कानून द्वारा मान्य सामान्य व्यवहार को छोड़कर असामान्य व्यवहार क्यों करता है? इस प्रष्न का सम्बन्ध अपराध के कारकों से है। अपराध की प्रकृति इतनी अधिक जटिल है कि इसके लिए कोई एक कारक उत्तरदायी नहीं है। क्योंकि अपराध अनेक प्रकार के होते हैं, इसलिए इनके कारक भी अनेक हैं। वास्तव में, अपराध के लिए कोई एक प्रकार उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता है। मुख्य रूप से हम अपराध के कारकों को निम्नलिखित श्रेणियों में बाँट सकते हैं—

(क) अपराध के जैविक कारक (ठपवसवहपबंस थ्ंबजवते व ब्तपउम)

अपराध के अनेक जैविक कारक बताए गए हैं— जैविक कारकों का अर्थ उन कारकों से है, जो जन्म से सम्बन्धित या षरीर से सम्बन्धित होते हैं। अपराध में निम्नलिखित जैविक कारक सहायक बताए गए हैं—

हैकरवाल[3] के अनुसार, आयु भी व्यक्ति को अपराधी बनाने में महत्वपूर्ण कारक कही जा सकती है। प्रायः युवावस्था में अपराध अधिक किए जाते हैं। जैसा कि इलियट एवं मैरिल[4] ने लिखा है, अपराध सम्बन्धी आँकड़ों का विष्लेशण करने से पचा चलता है कि इन अपराधियों में अधिक संख्या युवा वर्ग की होती है, जोकि अधिकतर मानसिक संघर्श का षिकार होते हैं।

(2) लिंग ¼ैमग) : अधिकतर पुरूश ही अपराध करते हैं। इसका कारक यह है कि पुरूश का स्वभाव आक्रमणषील (।हहतमेपअम) होता है। लड़कियों का प्रत्येक व्यवहार माताओं द्वारा निर्देषित होता रहता है। इसी से लड़कियाँ, जो नियन्त्रण से भाग निकलती है, अवैध रूप से गर्भवती हो जाती हैं।

(3) षारीरिक दोश (च्ीलेपवसवहपबंस कममिबजे) :

कुछ विद्वान् षारीरिक दोशों को अपराध का कारक मानते हैं। उदाहरणार्थ–लोम्ब्रोसो (स्वउइतवेव)[5] के अनुसार अपराधियों में जन्म से ही विषेश प्रकार के अपराधिक गुण होते हैं, जो षरीर के प्रदर्षित होती है।

(ख) **अपराध के मनोवैज्ञानिक कारक (च्ेलबीवसवहपबंस थ्ंबजवते वि ब्तपउम)**

अपराध के अनेक मनोवैज्ञानिक कारक भी बताए गए हैं। ऐसे कारक व्यक्ति की मनोदषा से सम्बन्धित होते हैं।[6] अपराध के निम्नलिखित मनोवैज्ञानिक कारक बताए गए हैं–

(1) मानसिक कमी (डमदजंस कमपिमदबल)

(2) मानसिक रोग (डमदजंस कपेमेंम)

(3) संवेगात्मक अस्थिरता और संघर्श (म्उवजपवदंस पदेजंइपसपजल ंदक बवदसिपबजे)

(4) प्रजाति तथा जन्म–स्थान (त्ंबम ंदक छंजपअपजल)

(5) वंषानुक्रमण ¼भ्मतमकपजल)

(4) चरित्रहीनता (ब्ींतंबजमतसमेदमे)

(ग) अपराध के पारिवारिक कारक (थ्ंउपसल थ्ंबजवते वि ब्तपउम) : वास्तव में, व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में परिवार का अद्वितीय स्थान है। एक व्यक्ति पर उसके परिवार की पूर्ण छाप पड़ी होती है। क्योंकि परिवार में समाजीकरण की प्रक्रिया बच्चे के स्वभाव को निष्चित करती है। यदि बचपन में बच्चे की उचित रूप में षिक्षा–दीक्षा नहीं होती है तो बाद में बच्चा एक अच्छा नागरिक बनाने में विफ हो जाता है जिस कारण वह अपराधी भी बन सकता है। अपराध को प्रोत्साहन देने वाले कुछ पारिवारिक कारक निम्नलिखित हैं–

(1) वैवाहिक स्तर (डंतपजंस ैजंजने)

(2) टूटे या भग्न परिवार (ठतवामद भ्वउमे) : अधिकांष अपराधी टूटे, भग्न या नश्ट परिवारों से आते हैं। भग्न परिवार से अभिप्राय ऐसे परिवारों से होता हैं जहाँ किसी संकट के चरण परिवार का नियन्त्रण और व्यवस्था समाप्त हो जाती है। अगर माता–पिता दोनों मर चुके हैं या उनमें से एक की मृत्यु हो चुकी है या माता–पिता के सम्बंध प्रेमपूर्ण नहीं हैं, तो ऐसी स्थिति वाले परिवार भग्न परिवार कहलाते हैं। जब माता–पिता या उनमें से कोई एक व्यभिचारी या अपराधी होता है तो बच्चों पर भी वही प्रभाव पड़ता है। ऐसे घरों में पारिवारिक सदस्यों को न तो उचित प्रेम ही प्राप्त होता है और न ही सम्मान। ऐसी स्थिति में

उन्हें सभी प्रकार के कार्य करने का अवसर प्राप्त होता है और पारिवारिक नियन्त्रण भी षिथिल पड़ जाता है। बार्न्स एवं टीटर्स (ठंतदमे ंदक ज्ममजमते) के अनुसार, भग्न परिवार मनोवैज्ञानिक अथवा भौतिक दृश्टि से टूटे परिवार होते हैं। वहाँ अत्यधिक तनावपूर्ण वातावरण रहता है, जिसका प्रभाव सदस्यों, विषेश रूप से बच्चों पर पड़ता है। वे अपने घर तथा परिवार के सदस्यों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण भावना नहीं रख पाते और निराषा व कुण्ठा के षिकार हो जाते हैं, जिनका प्रदर्षन उनके अपराधी व्यवहार द्वारा होता है। षिकांगो में हुए अध्ययन से पता चलता है कि 37 प्रतिषत लड़के तथा 53 प्रतिषत लड़कियाँ, जोकि बाल अपराधी बन जाती हैं, इन्हीं भग्न परिवारों में आते हैं। भग्न परिवार का प्रभाव लड़कों की अपेक्षा लड़कियों पर अधिक पड़ता है।

(3) पारिवारिक अनुषासन का अभाव (संबा वि िउपसल कपेबपचसपदम)

(घ) अपराध के आर्थिक कारक (म्बवदवउपब थ्बजवते पद ब्तपउम) :

अपराध के प्रमुख आर्थिक कारक अग्रलिखित हैं

(1) आर्थिक स्थिति (म्बवदवउपब ेजंजने) : मावरर (डवूतमत)[7] के अनुसार यह धारणा बार–बार व्यक्त की गई है कि आर्थिक दषा अपराध के लिए मुख्य भूमिका बनती है। यह निश्कर्श कुछ अंषों तक इसलिए मान्य है कि अपराध में मुख्यतः अपहरण अथवा सम्पत्ति अपहरण का प्रयास पाया जाता है। अपराध मुख्यतः आर्थिक दषा की देन है।

(3) कम मजदूरी और बेरोजगारी (स्मे ूहमे ंदक नदमउचसवलउमदज)

(4) औधोगीकरण तथा नगरीकरण (प्दकनेजतपंसप्रंजपवद ंदक नतइंदप्रंजपवद)

(5) व्यावसायिक मनोरंजन (च्तवमिेपवदंस तमबतमंजपवद)

(6) निर्धनता (च्वअमतजल) :

(2) व्यापारिक स्थिति (ठनेपदमे ब्लबसम) : व्यापारिक की गिरावट के कारण रोजगार में कमी पड़ जाती है, माल का निकास रूक जाता है, पैसे की कमी पड़ जाती है और इससे समाज में भ्रश्टाचार और अपराध बढ़ने लगते हैं।

(च) अपराध के सामाजिक कारक ैवबपंस थ्बजवते वि ब्तपउम)

अपराध के निम्नलिखित प्रमुख कारक बातए गए हैं–

(1) सामाजिक कुरितियाँ ैवबपंस मअपसे

(2) सांस्कृतिक संघर्श (ब्नसजनतंस बवदसिपबजे)

(3) चलचित्र (डवअपमे)

(4) सामाजिक धारणाएँ तथा मूल्य ैवबपंस ंजजपजनकमे ंदक अंसनमे)

(5) सामाजिक विघटन ैवबपंस कपेवतहंदप्रंजपवद)

(6) गन्दी बस्तियाँ (सनउे)

(7) षिक्षा (म्कनबंजपवद)

(8) दूशित कारावास व्यवस्था (क्ममिबजपअम रंपस`लेजमउ)

निष्कर्श :

उपर्युक्त कथनों के अनुरूप यह बात स्पश्ट होती है कि समाज और उसके सामाजिक प्राणी किसी ना किसी रूप से अपराधिक कारणों से प्रभावित होते हैं क्योंकि उसी समाज में बसने वाले व्यक्ति कानून का उल्लंघन करते हैं। जिसे समाज स्वीकार नहीं करता है और उक्त व्यक्ति को अपराध के प्रति उत्तरदायी ठहराता है। अपराध के कई कारण है, जिनमें जैविक कारणों में लिंग षारीरिक दोश, मनोवैज्ञानिक कारणों में मानसिक रोग, संवेगनात्मक अस्थिरता, वंषानुक्रम, एवं चरित्रहीनता आते हैं। वही अपराध के पारिवारिक कारणों में परिवार के संगठन का टुटना विलंब से विवाह होना, अषिक्षित परिवार, परिवार में अनुषासन की कमी जैसे महत्वपूर्ण कारक आर्थिक कारक है, जो अपराध करने के लिए हर समय दूर पड़ी मानव चेतना की उकसाता रहता है। कम मजदूरी बेरोजगारी, निर्धनता औद्योगिक कारण जैसे तथ्य अपराध को जन्म देते हैं। जिस समाज में मानव बसता है, उस समाज का रहन सहन कुरितियाँ सांस्कृतिक संघर्श–तथा मनोरंजन की सुविधा वाली वस्तु जिसमें चलचित्र पर परोसे जाने वाले असामाजिक विशयों के तथ्य जैसे ब्लू फिल्म, धार्मिक भावना को ठोस पहुँचाने वाले विडियों अपराधिक विचार इत्यादि, भी समाज को अनेकों प्रकार से अपने अपराधिक चपेट में लेते हैं। अंततः यह कहा जा सकता है कि कुछ अपराध किसी समाज के लिए अपराध नहीं है और वहीं अपराध दूसरे समाज के लिए गुनाह बन जाता है।

संदर्भ सूची :

1. इलियट एम0ए0 एवं मैरिल (1953) एफ0ई0 सोषल डिसऑर्गनाजेषन अमेरिकन जनरल ऑफ सोषियोलॉजी न्यूयार्क, पृ0–542
2. सेथना एम0 जे0 (1998) सोसाइटी एण्ड द क्रिमिनल नेषनल पब्लिकेषनस, लंदन, पृ0–14
3. हैकरवाल (1934) इकोनोमिक एण्ड सोषल आस्पेक्ट ऑफ क्राइम इन इंडिया, जी0 ऐलेन एण्ड अनबीन लि0, पृ0–116
4. इलियट एम0 ए0 एवं एफ0ई0 मैलिए (1953) सोषल डिसऑर्गनाजेषन अमेरिकन जनरल ऑफ सोषियोलॉजी, न्यूयार्क, पृ0–441
5. लोम्ब्रोसो (1854) द बर्न क्रिमिनल एज ए सबस्पेसीज ऑफ होमो सेपिनेस, द यूनिवरसिटि पाविया प्रेस, पृ0–11
6. रिचर्ड नाडस (2011) डिक्षनरी ऑफ क्रिमिनोलॉजी, नेषनल लाईब्रेरी ऑफ आस्ट्रेलिया, पृ0–61
7. ई0 आर0 मावरर (2018) डिसऑगेनाइजेषन : पर्सनल एण्ड सोषल, सोसियोलॉजी गाईड पब्लिकेषन, इ बुक ऑफ गुगल, पृ0–96